6. श्लोक – जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतो हं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥

अर्थ – पुष्कर और आवर्तक नाम वाले मेघों के लोक प्रसिद्ध वंश में तुम जनमे हो। तुम्हें मैं इन्द्र का काम रूपी मुख्य अधिकारी जानता हूँ। विधिवश अपनी प्रिया से दूर पड़ा हुआ मैं इसी कारण तुम्हारे पास याचक बना हूँ। गुणी जन से याचना करना अच्छा है, चाहे वह निष्फल ही रहे। अधम से मांगना अच्छा नहीं, चाहे वह सफल भी हो।

7. श्लोक – संतप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोदप्रियायाः
संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या॥

अर्थ – जो सन्तप्त हैं, हे मेघ! तुम उनके रक्षक हो। इसलिए कुबेर के क्रोध वश विरही बने हुए मेरे सन्देश को प्रिया के पास पहुँचाओ। यक्षपतियों की अलका नामक प्रसिद्ध पुरी में तुम्हें जाना है, जहाँ बाहरी उद्यान में बैठे हुए शिव के मस्तक से छिटकती हुई चाँदनी उसके भवनों को धवलित करती है।

8. श्लोक – त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसन्त्यः।
कः संनद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥

अर्थ – जब तुम आकाश में उड़ते हुए उठोगे तो प्रवासी पथिकों की स्त्रियाँ मुँह पर लटकते हुए घुँघराले बालों को ऊपर फेंक कर इस आशा से तुम्हारी ओर टकटकी लगायेंगी कि अब प्रियतम अवश्य आते होंगे। तुम्हारे घुमड़ने पर कौन सा जन विरह में व्याकुल अपनी पत्नी के प्रति उदासीन रह सकता है, यदि उसका जीवन मेरी तरह पराधीन नहीं है?

Scanned with CamScanner

RAS

Date 18 / 05 / 2020

5- अपादाने पंचमी (अपादान कारक) जहाँ से कोई वस्तु पृथक होती हो या जिससे कोई उत्पन्न होता हो अथवा जिससे भय हो या भय के कारण रक्षा की जाती हो वह अपादान कहलाती है। अपादान में पंचमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। यथा- "वृक्षात् पत्रं पतति" "गंगा हिमालयात् प्रभवति।" पापिक: चौरात् बिभेति "हिंसात् त्रायते नगरं"

विशेष -

इसके अतिरिक्त हेत्वादि प्रसंगों तथा कुछ शब्दों के योग में भी पंचमी प्रयुक्त होती है। जिसकी चर्चा आगे होगी

6- षष्ठी विभक्ति -

सम्बन्ध को कारक नहीं कहा जाता क्योंकि क्योंकि उसका क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता अपितु उसका सम्बन्ध कर्ता, कर्म आदि कारणों से होता है अत: 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' यह लक्षण उसमें घटित नहीं होती। यथा - दशरथस्य पुत्र: राम: वनं गच्छति" यहाँ दशरथस्य का गच्छति क्रिया से कोई साक्षात सम्बन्ध नहीं है। अत: इसे कारक नहीं कहते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है।

7- अधिकरणे सप्तमी - कर्ता और कर्म के द्वारा कर्तृनिष्ठ तथा कर्मनिष्ठ क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा - 'कटे आस्ते स सन्यासी' (कर्तृनिष्ठ) 'स्थाल्यां पचति पायसम्' (कर्मनिष्ठ)।

8- सम्बोधने च - सम्बोधन का क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं होता क्योंकि यह तो वाक्य में केवल व्यक्ति के अभिमुखीकरण के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा - सीते!, प्रभो!, इत्यादि। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता

कारकों के प्रयोग - नियमों को जानने के साथ यह भी जानना आवश्यक है वक्ता जिस प्रकार से अपने भावों को प्रस्तुत करना चाहता है उसी के अनुरूप कारक होंगे। अत: कहा गया है, "विवक्षित: कारकाणि भवन्ति"।

Scanned with CamScanner

इसः कर्म का 'नीरवाति' इस क्रिया के साथ साक्षात् व्यवधान रहित सम्बन्ध है अतः क्रिया के साथ अन्वय करने की योग्यता होने के कारण द्वितीया विभक्तियुक्त 'कथां' यह कारक हुआ।

विशेष - कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है यथा रामः वेदं पठति, किन्तु कर्म वाच्य में प्रथमा विभक्ति युक्त होती है, 'रामेण वेदः पठ्यते'। इसके अतिरिक्त कुछ अव्ययों तथा कर्मप्रवचनीय संज्ञा वाले शब्दों के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है जिसका विस्तृत विवेचन सूत्रों के माध्यम से किया जायेगा।

3. करण कारक - करणे तृतीया - जो क्रिया की सिद्धि में विशिष्ट उपकारक हो वह करण कारक कहलाता है। इसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा - 'शिक्षकः दण्डेन ताडयति' यहाँ 'दण्ड' साधन का 'ताडन' क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध हो रहा है अतः क्रिया के साथ अन्वय करने की योग्यता होने के कारण 'दण्डेन' में तृतीया विभक्ति युक्त करणकारक हुआ।

विशेष - तृतीया का प्रयोग सहार्थक तथा हेत्वादि अर्थों में भी होता है जिनका विवेचन आगे सूत्रों के माध्यम से करेंगे।

4- सम्प्रदाने चतुर्थी (सम्प्रदानकारक) - जिसको कोई वस्तु दी जाय या जिसके निमित्त कोई कार्य किया जाय अथवा कोई वस्तु जिसे स्वीकार हो वह कारक सम्प्रदान कारक कहलाता है। इन सभी स्थानों में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा, 'माता बालकाय मोदकं ददाति' हरये दुग्धं ~~रोचते~~ रोचते।

विशेष - नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा इत्यादि के योग में भी चतुर्थी का प्रयोग आगे सूत्रों के माध्यम से बताया जायेगा।

Scanned with CamScanner